1 देश की माटी

देश की माटी, देश का जल।
हवा देश की, देश के फल ।
सरस बनें प्रभु, सरस बनें।।

देश के घर और देश के घाट।
देश के वन और देश के बाट।
सरल बनें प्रभु, सरल बनें।।

देश के तन और देश के मन।
देश के घर के भाई–बहन।
विमल बनें प्रभु, विमल बनें।।

देश की इच्छा, देश की आशा।
देश की शक्ति, देश की भाषा।
एक बनें प्रभु, एक बनें।।

देश की माटी, देश का जल।
हवा देश की, देश के फल।
सरस बनें प्रभु, सरस बनें।।

रवीन्द्रनाथ टैगोर

निर्देश : भारत देश की विशेषताओं पर चर्चा करें। कविता को सस्वर गाएँ और गवाएँ।

अभ्यास कार्य

शब्द–अर्थ

सरस – रसीला, मोहक

घाट – तट के आस–पास का सीढ़ीदार स्थान

बाट – रास्ता

विमल – निर्मल, स्वच्छ

उच्चारण के लिए

प्रभु, देश, भाई–बहिन,

सोचें और बताएँ

1. सरस बनाने के लिए किसको निवेदन किया गया है ?
2. हमारा तन और मन किसका बताया गया है ?
3. वन और बाट कैसे होने चाहिए ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।

(भाई–बहन, सरस, इच्छा, फल)

(क) हवा देश की देश के ..... ।

(ख) सरस बनें प्रभु ..... बनें।

(ग) देश के घर के ..... ।

(घ) देश की ..... देश की आशा।

2 देश की माटी व जल कैसे होने चाहिए ?

3 वन और बाट से क्या आशय है ?

4 विमल बनने के लिए किसको कहा गया है ?

5 तन और मन का देश से क्या संबंध है ?

6 किस–किसके लिए एक बनने को कहा गया है ?

भाषा की बात

- नीचे कुछ शब्द और उनके विपरीत अर्थ वाले शब्द दिए जा रहे हैं, उन्हें रेखा खींचकर मिलाएँ–

आशा	विदेश
इच्छा	नीरस
शक्तिशाली	निराशा
देश	अनिच्छा
सरस	कमजोर

यह भी करें–

- प्रस्तुत कविता में देश की माटी और देश का जल प्रभु से सरस बनाने के लिए कहा गया है, इसी प्रकार देश की क्या–क्या चीजें कविता में कही गई है तथा प्रभु से उनके लिए क्या विनती की गई है सूची बनाएँ।

नाम	विशेषताएँ

- उक्त कविता को हाव–भाव के साथ अपनी कक्षा में सुनाएँ, 'सरस बनें प्रभु सरस बनें' ..... ऐसे ही कविता को आगे बढ़ाएँ

देश की नदियाँ देश के घर,
स्वच्छ बनें प्रभु स्वच्छ बनें ।

जीवन की महत्त्वाकांक्षाएँ बालकों के रूप में आती है।
(रवीन्द्रनाथ टैगोर)